Faizane Ahle Bait (Hindi)

फ़ैज़ाने अहले बैत

सफ़हात 38

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला	:	**फ़ैज़ाने अहले बैत**
पहली बार	:	जुल ह़िज्जतिल ह़राम **1442** हि., जुलाई **2021** ई.
ता'दाद	:	31,00
नाशिर	:	**मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

फ़ैज़ाने अहले बैत

येह रिसाला **(फ़ैज़ाने अहले बैत)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج۵۱ص۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद–1, गुजरात

MO. 98987 32611 • E-mail :hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖنَ ،
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ،

फ़ैज़ाने अहले बैत

दुआए अ़त्तार

या अल्लाह पाक ! जो कोई 37 सफ़्हात का रिसाला : "**फ़ैज़ाने अहले बैत**" पढ़ या सुन ले उसे और उस की आने वाली नस्लों को अहले बैते किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان की सच्ची गुलामी नसीब फ़रमा और उस की बे हिसाब मग़्फ़िरत कर । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه **:** "हर शख़्स की दुआ़ पर्दे में होती है यहां तक कि वोह (ह़ज़रते) मुह़म्मद صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आले मुह़म्मद पर दुरूदे पाक पढ़े ।" (مُعْجَم اَوسط ج۱ ص۲۱۱ حدیث۷۲۱)

उन के मौला के उन पर करोरों दुरूद
उन के अस्ह़ाबो इ़तरत पे लाखों सलाम

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 308)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّد

सादाते किराम से हुस्ने सुलूक करने का अ़ज़ीमुश्शान इन्आ़म (ह़िकायत)

कूफ़े में एक नेक शख़्स के पड़ोस में अबुल ह़सन अ़ली बिन

इब्राहीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नामी आटे के मालदार ताजिर रहते थे । एक दिन उन से एक सय्यिद साहिब ने कुछ आटा मांगा, उन्हों ने आटे की रक़म मांगी, तो सय्यिद ज़ादे ने फ़रमाया : ''मेरे पास माल नहीं हैं, अलबत्ता आप मेरा येह क़र्ज़ मेरे नानाजान मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़िम्मे लिख लो ।'' अबुल ह़सन अ़ली बिन इब्राहीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उन को आटा दे दिया और येह क़र्ज़ **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़िम्मे लिख लिया । (इस मुआ़मले का अ़लवी, ह़सनी व ह़ुसैनी ह़ज़रात को पता चला तो उन्हों ने भी उन से आटे का सुवाल किया तो उन्हों ने इन सब को भी आटा पेश कर दिया और येह सारा क़र्ज़ रसूले पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नाम से लिखते रहे) येह सिल्सिला चलता रहा, यहां तक कि उन का माल ख़त्म हो गया और वोह ग़रीब हो गए । एक दिन उन्हों ने ह़ज़रते शैख़ उ़मर बिन यह़या अ़लवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर सारा वाक़िआ़ सुनाया और वोह तह़रीर भी दिखाई जिस में उन्हों ने ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नाम सारा क़र्ज़ लिखा हुवा था । रात जब अबुल ह़सन अ़ली बिन इब्राहीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه सोए तो ख़्वाब में रह़मते कौनैन, नानाए ह़सनैन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़ज़रते मौला अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْه के साथ ज़ियारत की सआ़दत ह़ासिल हुई । **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ अबुल ह़सन ! क्या तुम मुझे पहचानते हो ? अबुल ह़सन अ़ली बिन इब्राहीम ने अ़र्ज़ की : जी हां ! आप **अल्लाह** पाक के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं । प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम ने मेरी शिकायत क्यूं की ? ह़ालां कि तुम ने मेरे साथ मुआ़मला किया है ।'' अ़र्ज़ किया :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

''आक़ा ! मैं मोह़ताज व तंगदस्त हो गया था।'' **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अगर तुम ने मेरे साथ मुआ़मला दुन्या के लिये किया है तो मैं तुम्हें इस का पूरा पूरा बदला अभी दे देता हूं और अगर तुम ने मेरे साथ मुआ़मला आख़िरत के लिये किया है तो सब्र करो, बेशक मेरे पास बहुत अच्छा बदला है।'' अबुल ह़सन अ़ली बिन इब्राहीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه पर रिक़्क़त त़ारी हो गई और रोते रोते नींद से बेदार हुए और जंगलों और पहाड़ों की त़रफ़ निकल गए। कुछ दिनों के बा'द वोह एक पहाड़ के ग़ार में फ़ौत शुदा ह़ालत में पाए गए। लोगों ने उन को उठाया और नमाज़े जनाज़ा वग़ैरा के बा'द दफ़्न कर दिया। उस रात कूफ़े के सात नेक लोगों ने ख़्वाब में ह़ज़रते अबुल ह़सन अ़ली बिन इब्राहीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को सब्ज़ रेशम का ह़ुल्ला (या'नी क़ीमती सब्ज़ लिबास) पहने हुए देखा कि वोह जन्नत के बाग़ों में चल रहे हैं, उन्हों ने पूछा : ऐ अबुल ह़सन ! आप को येह इन्आ़म कैसे ह़ासिल हुवा ? आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने ह़ज़रत मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ मुआ़मला किया उस ने वोह पा लिया जो मैं ने पाया, जान लो ! बेशक मैं ने अपने सब्र के सबब **अल्लाह** पाक के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस पा लिया।'' (شرف المصطفٰی ج ۳ ص ۲۱٦)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

आल से अस्ह़ाब से क़ाइम रहे ता अबद निस्बत ऐ नानाए ह़ुसैन

(वसाइले बख़्शिश, स. 257)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सच्चा आ़शिक़े रसूल कौन ?

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! येह ह़क़ीक़त है कि जब "**किसी**" से मह़ब्बत हो जाए तो "**उस**" से निस्बत रखने वाली हर शै से प्यार हो जाता है, मह़बूब की औलाद हो या उस के साथी सब प्यारे लगते हैं, ऐसे ही जिस को **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत होती है वोह उन की आले पाक से भी मह़ब्बत रखता है और उन के सह़ाबा से भी प्यार करता है, अगर किसी के अन्दर इ़श्क़े रसूल देखना हो तो येह देखिये कि वोह सह़ाबा व अहले बैत से किस क़दर मह़ब्बत रखता है। यक़ीनन जो कोई अहले बैते अत़्हार का सच्चा मुह़िब्बो मो'तक़िद (या'नी मह़ब्बतो अ़क़ीदत रखने वाला) है और साथ में तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का भी दिलो जान से अदबो एह़तिराम करता और सह़ाबा को जन्नती मानता है तो ऐसा ख़ुश नसीब शख़्स ही ह़क़ीक़त में सच्चा पक्का आ़शिक़े रसूल और आ़शिक़े सह़ाबा व अहले बैत है। **अल्लाह** पाक ऐसों के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमाए। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

क़ल्ब में इ़श्क़े आल रखवा है ख़ूब इस को संभाल रखवा है
क्यूं जहन्नम में जाऊं, सीने में इ़श्क़े अस्ह़ाबो आल रखवा है

(वसाइले बख़्शिश, स. 443, 444)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

क़ुरआने करीम से फ़ज़ाइले अहले बैत का सुबूत

अल्लाह पाक पारह 22, **सूरतुल अह़ज़ाब**, आयत 33 में इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ﴿۳۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह तो येही चाहता है ऐ नबी के घर वालो कि तुम से हर नापाकी दूर फ़रमा दे और तुम्हें पाक कर के ख़ूब सुथरा कर दे।

अहले बैत से मुराद कौन ?

"**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में **इस** मुबारक आयत की तफ़्सीर में है : अहले बैत में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुतह्हरात (या'नी पाक बीवियां) और ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत फ़ातिमा ज़हरा और अ़लिय्ये मुर्तज़ा और ह़सनैने करीमैन (या'नी इमामे ह़सन व इमामे हुसैन) رَضِیَ اللهُ عَنْهُم सब दाख़िल हैं। आयात व अह़ादीस को जम्अ़ करने से येही नतीजा निकलता है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 780)

इमाम त़बरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान कर्दा आयते मुक़द्दसा की तफ़्सीर करते हुए फ़रमाते हैं : या'नी ऐ आले मुह़म्मद ! **अल्लाह** पाक चाहता है कि तुम से बुरी बातों और फ़ोह़्श (या'नी गन्दी) चीज़ों को दूर रखे और तुम्हें गुनाहों के मैल कुचैल से पाको साफ़ कर दे। **(تفسیر طبری ج ۱۰ ص ۲۹۶)**

उन की पाकी का ख़ुदाए पाक करता है बयां
आयए तत़्हीर से ज़ाहिर है शाने अहले बैत

(ज़ौक़े ना'त, स. 100)

शाने अहले बैत

ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : येह आयते करीमा अहले बैते किराम के फ़ज़ाइल का मम्बअ़ (या'नी सरचश्मा) है, इस से इन के ए'ज़ाज़े मआसिर (या'नी बुलन्द मक़ाम)

और उ़लुव्वे शान (या'नी ऊंची शान) का इज़्हार होता है और मा'लूम होता है कि तमाम अख़्लाक़े दनिय्या (या'नी घटिया अख़्लाक़) व अह़वाले मज़्मूमा (या'नी ना पसन्दीदा ह़ालतों) से उन की तत़्हीर (या'नी पाकी) फ़रमाई गई। बा'ज़ अह़ादीस में मरवी है कि अहले बैत, नार (या'नी जहन्नम) पर ह़राम हैं और येही इस तत़्हीर का फ़ाएदा और समरा है, और जो चीज़ उन के अह़वाले शरीफ़ा (या'नी शराफ़त वाली ह़ालतों) के लाइक़ न हो इस से उन का परवर्दगार उन्हें मह़फ़ूज़ रखता और बचाता है। (सवानेह़े करबला, स. 82)

अ़ज़ीम आ़शिक़े सह़ाबा व अहले बैत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ''ह़दाइक़े बख़्शिश'' में अहले बैत की शान में फ़रमाते हैं :

पारहाए सुह़ुफ़ ग़ुन्चहाए क़ुदुस अहले बैते नुबुव्वत पे लाखों सलाम
आबे तत़्हीर से जिस में पौदे जमे उस रियाज़े नजाबत पे लाखों सलाम
ख़ूने ख़ैरुर्रुसुल से है जिन का ख़मीर
उन की बे लौस त़ीनत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 309)

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : पारह : टुकड़ा। **सुह़ुफ़ :** सह़ीफ़े की जम्अ़, मुक़द्दस किताबें। **ग़ुन्चा :** कली। **क़ुदुस :** पाक। **आबे तत़्हीर :** मुबारक पानी। **रियाज़ :** बाग़। **नजाबत :** आ'ला ख़ानदान या नस्ल का होना। **ख़मीर :** अस्ल/फ़ित़रत। **बे लौस :** ख़ालिस। **त़ीनत :** त़बीअ़त।

शर्ह़े कलामे रज़ा : अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पाकीज़ा घराना या'नी ख़ानदान मुक़द्दस किताबों के जुदा जुदा मुख़्तलिफ़ ह़िस्से और मुबारक फूल हैं, जिन को पाकीज़ा व

बा बरकत पानी से सींचा गया है, गोया येह सारे का सारा ह़सीनो दिलकश बाग़ है, इस शराफ़त वाले बेहतरीन ख़ानदान पर लाखों सलाम हों कि इस ख़ानदाने आ़लीशान में ख़ूने रसूले मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शामिल है इन मुख़्लिसीन व नेक हस्तियों की त़बीअ़तों पर लाखों सलाम हों ।

पाक बीवियां अहले बैत में दाख़िल हैं

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! अहले बैत में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तमाम औलाद और अज़्वाजे मुत़ह्हरात (या'नी पाक बीवियां) भी शामिल हैं । ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि (पाक) बीवियों का अहले बैत होना क़ुरआनी आयात से साबित है । (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 450)

अहले इस्लाम की मादराने शफ़ीक़ बानुवाने त़हारत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 310)

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : अहले इस्लाम : मुसल्मान । **मादरान :** मादर की जम्अ़ या'नी माएं । **शफ़ीक़ :** मेह्रबान । **बानू :** इ़ज़्ज़त दार ख़ातून । **त़हारत :** पाकीज़गी ।

शर्ह़े कलामे रज़ा : अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़त वाली, पाक बीवियां सारे मुसल्मानों की मेह्रबान माएं हैं, इन पर लाखों सलाम हों ।

हर ज़ौजए नबी जन्नती जन्नती सब सह़ाबियात भी जन्नती जन्नती

बीबी आ़इशा की ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत

तमाम मुसल्मानों की अम्मीजान, सह़ाबिया बिन्ते सह़ाबी, त़य्यिबा,

ता़हिरा, आ़बिदा (या'नी इ़बादत गुज़ार), ज़ाहिदा (या'नी दुन्या से बे रग़बत), मुज्तहिदा (या'नी बहुत बड़ी आ़लिमा) ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا पर एक बार ख़ौफ़े ख़शिय्यत का ग़लबा था, रो रही थीं कि सह़ाबी इब्ने सह़ाबी, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا ने आ कर अ़र्ज़ की : आप को मुबारक हो ! ख़ुश हो जाइये ! ख़ुदा की क़सम ! मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है कि "**आ़इशा**" जन्नती है। येह सुन कर अम्मीजान ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا ने इर्शाद फ़रमाया : فَرَّجْتَ عَنِّیْ فَرَّجَ اللّٰهُ عَنْكَ या'नी तुम ने मेरा ग़म दूर किया **अल्लाह** पाक तुम्हारा ग़म दूर करे। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 30, स. 283 ब तग़य्युर) (مسند ابی حنیفه ص ٤١٧ ملخصاً)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से "**आ़इशा जन्नती हैं**" के तह़त फ़रमाते हैं : इस बात में कोई शक नहीं कि ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا जन्नत में ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ बुलन्द दरजात में होंगी। (شرح مسند ابی حنیفه ص ٤١٧)

बिन्ते सिद्दीक़ आरामे जाने नबी — उस ह़रीमे बराअत पे लाखों सलाम
या 'नी है सूरए नूर जिन की गवाह — उन की पुरनूर सूरत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 311)

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : बिन्ते सिद्दीक़ : ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا। **ह़रीम :** बीवी। **बराअत :** तोहमत से पाकी।

शर्ह़े कलामे रज़ा : सह़ाबी इब्ने सह़ाबी, मुसल्मानों के पहले ख़लीफ़ा, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه की प्यारी शहज़ादी और तमाम मुसल्मानों की अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا **अल्लाह** पाक के

प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक दिल का सुकूनो क़रार हैं, उस बा पर्दा व बा ह़या पाक बीवी पर लाखों सलाम, आप ऐसी बा ह़या व पाकीज़ा ख़ातून हैं कि आप की अ़ज़मत की पाकीज़गी क़ुरआने करीम की सूरए नूर में बयान की गई है, आप के नूरानी चेहरे पर लाखों सलाम हों।

आ़शिक़े अक्बर की अहले बैते अत़्हार से मह़ब्बत

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه के सामने एक मौक़अ़ पर अहले बैते अत़्हार का ज़िक्र हुवा तो आप ने फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! रसूले पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़राबत दारों (या'नी रिश्तेदारों) के साथ हुस्ने सुलूक करना मुझे अपने क़राबत दारों से सिलए रेह़्मी करने से ज़ियादा मह़बूब व पसन्दीदा है। (بخاری ج ۲ ص ۵۳۸ حدیث ۳۷۱۲)

एक बार ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : ''रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उन के अहले बैत के बारे में लिह़ाज़ रखो।'' (بخاری ج ۲ ص ۵۳۸ حدیث ۳۷۱۳) मुराद येह है कि उन के ह़ुक़ूक़ और मरातिब का लिह़ाज़ करो। (नुज़्ह़तुल क़ारी, जि. 4, स. 605)

सिद्दीक़े अक्बर ता'ज़ीमन खड़े हो जाते

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के प्यारे चचाजान ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْه (चूंकि अहले बैत से थे इस लिये वोह) बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर होते तो ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه बत़ौरे एह़तिराम आप के लिये अपनी जगह छोड़ कर खड़े हो जाते थे। (معجم کبیر ج ۱۰ ص ۲۸۵ حدیث ۱۰۶۷۵)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللهُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّد

ह़सनैने करीमैन की ख़ुशी में फ़ारूक़े आ'ज़म की ख़ुशी ! (ह़िकायत)

ख़ानदाने अहले बैत के चमक्ते दमक्ते सितारे, ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने वालिदे मोह़तरम, ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه के पास यमन से कुछ बेहतरीन कपड़े आए तो आप ने वोह कपड़े मुहाजिरीन व अन्सार (सह़ाबए किराम) में तक़्सीम फ़रमा दिये। लोग उन कपड़ों को पहन कर बहुत ख़ुशी मह़सूस कर रहे थे, आप (या'नी ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़) मिम्बरे रसूल व क़ब्रे अन्वर के दरमियान बैठे हुए थे, लोग आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर सलाम अ़र्ज़ करते और दुआएं देते। अचानक आप के सामने जन्नती नौ जवानों के सरदार, ह़सनैने करीमैन या'नी ह़ज़रते इमामे ह़सन व ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا बाहर तशरीफ़ लाए, दोनों शहज़ादों के मुबारक बदन पर उन उ़म्दा कपड़ों में से कोई कपड़ा न था। जैसे ही आप ने शहज़ादों को देखा तो आप ने जलाल में आ कर (उ़म्दा कपड़े पहन कर ख़ुश होने वालों से) इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक की क़सम ! मैं ने तुम लोगों को जो क़ीमती कपड़े पहनाए हैं उन्हें देख कर मुझे ज़र्रा बराबर भी ख़ुशी नहीं हुई। सब लोग येह सुन कर परेशान हो कर अ़र्ज़ करने लगे कि ह़ुज़ूर ! ऐसी क्या बात हो

गई जो आप येह इर्शाद फ़रमा रहे हैं ? ह़ालां कि येह तमाम कपड़े आप ने ख़ुद ही अ़त़ा फ़रमाए हैं। इर्शाद फ़रमाया : येह बात मैं इन दोनों शहज़ादों की वज्ह से कह रहा हूं, जो लोगों के दरमियान इस ह़ालत में चल रहे हैं कि इन दोनों ने उन क़ीमती कपड़ों में से कोई भी कपड़ा नहीं पहना। फिर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़ौरन ह़ाकिमे यमन को ख़त़ (Letter) लिखा कि जल्द अज़ जल्द इमामे ह़सन व इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا के लिये 2 बेहतरीन और क़ीमती लिबास तय्यार करवा कर भेजो। ह़ाकिमे यमन ने फ़ौरन हुक्म की ता'मील की और 2 लिबास तय्यार करवा के भेज दिये। आप ने ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا को वोह लिबास पहनाए और ख़ुश हो कर इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक की क़सम ! जब तक इन दोनों शहज़ादों رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا ने नए कपड़े नहीं पहने थे, मुझे दूसरों के पहनने की कोई ख़ुशी न थी। एक रिवायत में यूं है कि ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا को कपड़े पहना कर आप ने इर्शाद फ़रमाया : अब मैं ख़ुश हो गया हूं।

(ابن عساکر ج۱٤ ص۱۷۷، ریاض النضرۃ ج۱ ص۳٤۱) (फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म, जि. 1, स. 389)

सह़ाबा और अहले बैत की दिल में मह़ब्बत है

ब फ़ैज़ाने रज़ा मैं हूं गदा फ़ारूक़े आ'ज़म का

(वसाइले बख़्शिश, स. 526)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّد

सुवारी से नीचे तशरीफ़ ले आते

ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के प्यारे प्यारे चचाजान ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْه कहीं पैदल जा रहे होते और ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म

व ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا सुवारी पर ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْه के पास से गुज़रते तो बत़ौरे ता'ज़ीम सुवारी से नीचे तशरीफ़ ले आते यहां तक कि ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْه वहां से गुज़र जाते।

(الاستیعاب ج۲ص۳۶۰)

कन्धों पर उठा लें (ह़िकायत)

अबुल मुहज़्ज़िम का बयान है : एक मरतबा हम एक जनाज़े में शरीक हुए, अ़ज़ीम सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه भी हमारे साथ थे, वापसी पर नवासए रसूल ह़ज़रत इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه को थकावट महसूस हुई तो आराम फ़रमाने के लिये एक जगह कुछ देर बैठ गए। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه अपनी चादर शरीफ़ से ह़ज़रते इमाम हुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه के मुबारक पाउं से गर्दो ग़ुबार (या'नी मिट्टी शरीफ़) दूर करने लगे तो ह़ज़रते इमाम हुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه ने उन्हें मन्अ़ फ़रमाया। इस पर ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** पाक की क़सम ! आप जनाब की जो अ़ज़मत मैं जानता हूं अगर लोगों को पता चल जाए तो वोह आप को (ज़मीन पर चलने ही न दें बल्कि) अपने कन्धों पर उठा लें। (طبقاتِ ابنِ سعد ج٦ص٤٠٨)

चल गई बादे मुख़ालिफ़ अल ग़ियास ऐ हुसैने बा वफ़ा फ़रियाद है

ह़ाल है बेह़ाल शाहे करबला

आप के अ़त्तार का फ़रियाद है

(वसाइले बख़्शिश, स. 588)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सुसराली रिश्तेदारों की शान

ह़ज़रते हिन्द बिन अबी हाला رَضِیَ اللهُ عَنْه जो कि शहज़ादिये कौनैन ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا के अख़्याफ़ी भाई हैं (अख़्याफ़ी या'नी वोह भाई बहन जिन के बाप अलग अलग और मां एक हो) रिवायत फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** पाक के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** पाक ने मेरे लिये न चाहा कि मैं निकाह़ करूं किसी ऐसी औ़रत से या अपने ख़ानदान में से किसी औ़रत का निकाह़ करूं किसी ऐसे मर्द से मगर येह कि वोह **जन्नती** हो। (ابن عساکر ج٦٩ص١٤٩)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : इस ह़दीसे पाक का मत़लब येह है कि मुझे ऐसे सुसराली रिश्ते से रोक दिया गया कि जिन का ख़ातिमा जहन्नम में जाने वाले आ'माल पर होना हो, मज़ीद फ़रमाते हैं : येह (ह़दीसे पाक) आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सुसराली रिश्तेदारों के लिये बहुत बड़ी ख़ुश ख़बरी है। (فیض القدیر ج٢ ص٢٥١)

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! इस रिवायत से जहां ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म, ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी इब्ने अ़फ़्फ़ान और मौला अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْهُم की शान ज़ाहिर होती है वहीं ह़ज़रते अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللهُ عَنْه के लिये भी नवीदे जन्नत (या'नी जन्नत की ख़ुश ख़बरी) लिये हुए है, क्यूं कि येह सब साह़िबान सह़ाबी होने के साथ साथ प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सुसराली रिश्तेदारों में से भी हैं।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

हर सह़ाबिये नबी ! जन्नती जन्नती सब सह़ाबियात भी ! जन्नती जन्नती
चार याराने नबी ! जन्नती जन्नती ह़ज़रते सिद्दीक़ भी ! जन्नती जन्नती
और उ़मर फ़ारूक़ भी ! जन्नती जन्नती उ़स्माने ग़नी ! जन्नती जन्नती
फ़ाति़मा और अ़ली ! जन्नती जन्नती हैं ह़सन हुसैन भी ! जन्नती जन्नती
वालिदैने नबी ! जन्नती जन्नती हर ज़ौजए नबी ! जन्नती जन्नती
और अबू सुफ़्यान भी ! जन्नती जन्नती हैं मुआ़विया भी ! जन्नती जन्नती

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सह़ाबा व अहले बैत से मह़ब्बत का बदला (ह़िकायत)

ह़ज़रते बिश्रे ह़ाफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक बार ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर मुझ से इर्शाद फ़रमाया : ऐ बिश्र ! क्या तुम जानते हो कि **अल्लाह** पाक ने तुम्हें अपने ज़माने के औलिया से बुलन्द मर्तबा क्यूं अ़त़ा फ़रमाया ? मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं नहीं जानता। तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम मेरी सुन्नत पर अ़मल करते हो और नेक लोगों की ख़िदमत करते हो, और अपने मुसल्मान भाइयों की ख़ैर ख़्वाही (या'नी उन्हें नसीह़त) करते हो और मेरे **सह़ाबा व अहले बैत** (رَضِیَ اللهُ عَنْهُم) से मह़ब्बत करते हो। येही सबब है कि जिस ने तुम्हें नेक लोगों की मन्ज़िल तक पहुंचा दिया है।" (رسالۂ قشیریہ ص ۳۱)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की इन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

शुक्रिया तुम ने आल का सदक़ा
मेरी झोली में डाल रखा है

(वसाइले बख़्शिश, स. 444)

आ'ला ह़ज़रत सय्यिदों को डबल देते

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه सादाते किराम का बहुत ख़याल फ़रमाते, यहां तक कि जब कोई चीज़ तक़्सीम फ़रमाते तो सब को एक एक अ़त़ा फ़रमाते और सय्यिद साहिबान को दो देते। (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 182 मुलख़्ख़सन)

हुब्बे सादात ऐ ख़ुदा दे, वासित़ा
अहले बैते पाक का फ़रियाद है

(वसाइले बख़्शिश, स. 588)

सादाते किराम को ख़ुसूसन क़ुरबानी का गोश्त देना

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه अपने बारे में फ़रमाते हैं : फ़क़ीर का मा'मूल है कि क़ुरबानी हर साल अपने ह़ज़रत वालिदे माजिद رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की त़रफ़ से करता है और इस का गोश्त पोस्त सब तसद्दुक़ (या'नी ख़ैरात) कर देता है और एक क़ुरबानी हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से करता है और इस का गोश्त पोस्त सब नज़्रे ह़ज़राते सादाते किराम करता है। تَقَبَّلَ اللّٰهُ تَعَالٰى مِنِّىْ وَمِنَ الْمُسْلِمِيْنَ, (या'नी **अल्लाह** पाक मेरी और सब मुसल्मानों की त़रफ़ से क़बूल फ़रमाए, आमीन।) (फ़तावा रज़विय्या, जि. 20, स. 456)

दो जहां में ख़ादिमे आले रसूलुल्लाह कर

ह़ज़रते आले रसूले मुक़्तदा के वासित़े

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 151)

इल्तिजाए अ़त्त़ार

ऐ मालदारो ! दुकानदारो ! डॉक्टरो ! अपनी अपनी त़ाक़त के मुत़ाबिक़ आले रसूल या'नी सादाते किराम की ख़िदमत कर के इन के नानाजान रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक क़ल्ब (या'नी दिल) को राह़त पहुंचाइये और बागे़ जन्नत में घर पाने के अस्बाब कीजिये, ज़हे नसीब ! हर दुकानदार येह ज़ेह्न बना ले कि मैं सादाते किराम को सौदा मुफ़्त (Free) या कम अज़ कम No profit No loss या'नी क़ीमते ख़रीद (या'नी परचेज़ रेट) पर दूंगा। यक़ीनन इस त़रह़ भी उन की बड़ी हमदर्दी व ख़ैर ख़्वाही होगी, काश ! हर डॉक्टर येह ज़ेह्न बना ले कि मैं सय्यिदों का ''चेकअप'' फ़्री करूंगा बल्कि हो सका तो मेडीसिन भी फ़्री पेश कर के आले रसूल का दिल ख़ुश करूंगा।

रमज़ानुल मुबारक के बा बरकत महीने में पड़ोस में रहने वाले सादाते किराम के यहां सह़री व इफ़्त़ारी, क़ुरबानी के दिनों में घर में बनने वाली लज़ीज़ डिशों में से कुछ न कुछ उन के घर जा कर अदबो एह़तिराम से उन की नज़्र कीजिये, कैसी नादानी है कि जिन के नानाजान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हम सदक़ा खा रहे हैं उन्ही के नवासे हमारी आसाइशों भरी ज़िन्दगी से कुछ भी फ़ाएदा न उठा सकें। आज अपना माल, अपनी दौलत, अपनी

पसन्दीदा चीज़ें सादाते किराम के क़दमों पर निसार करें फिर देखें उन के नानाजान रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कल क़ियामत के दिन कैसा मालामाल फ़रमाते हैं, ख़ुदा की क़सम ! वोह वक़्त जब न माल काम आएगा और न ओ़हदा व मन्सब अ़ज़ाबों से बचा पाएगा, उस वक़्त बेचैन दिलों के चैन, नानाए ह़सनैन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त काम आएगी । अगर दुन्या में इन की आल के साथ अच्छा सुलूक किया होगा, किसी बीमार सय्यिद ज़ादे का मुफ़्त इलाज किया होगा तो क्या अ़जब येही शहज़ादा अपने नानाजान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ कर के हमारे लिये शफ़ाअ़त का ज़रीआ़ बन जाए। और हां ! सिर्फ़ रिज़ाए इलाही की निय्यत से ख़िदमत कीजिये, बाक़ी उन का करम बेह़द व बे इन्तिहा है । नीज़ हरगिज़ हरगिज़ अपने दिल में येह वस्वसा न आने दीजिये कि पता नहीं येह सय्यिद है भी या नहीं ? हमें इस बात की बिल्कुल इजाज़त नहीं कि हम नसब की टोह में पड़ें, बस हमारे लिये उन का बतौ़रे सय्यिद मश्हूर होना ही काफ़ी है।

सय्यिद होने का सुबूत मांगना कैसा ?

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : फ़क़ीर बारहा फ़तवा दे चुका है कि किसी को **सय्यिद** समझने और उस की ता'ज़ीम करने के लिये हमें अपने ज़ाती इ़ल्म (या'नी तह़क़ीक़) से उसे **सय्यिद** जानना ज़रूरी नहीं, जो लोग **सय्यिद** कहलाए जाते हैं हम उन की ता'ज़ीम करेंगे,

हमें तह़क़ीक़ात की ह़ाजत नहीं, न सियादत (या'नी सय्यिद होने) की सनद मांगने का हमें हुक्म दिया गया है और ख़्वाही न ख़्वाही (या'नी ज़बर दस्ती) सनद दिखाने पर मजबूर करना और न दिखाएं तो बुरा कहना, मत्ऊ़न करना (या'नी त़ा'ना देना) हरगिज़ जाइज़ नहीं। اَلنَّاسُ اُمَنَاءُ عَلٰی اَنْسَابِهِم (या'नी लोग अपने नसब पर अमीन हैं)। हां जिस की निस्बत हमें ख़ूब तह़क़ीक़ मा'लूम हो कि येह सय्यिद नहीं और वोह "सय्यिद बने" उस की हम ता'ज़ीम न करेंगे, न उसे सय्यिद कहेंगे और मुनासिब होगा कि ना वाक़िफ़ों को उस के फ़रेब (या'नी धोके) से मुत्त़लअ़ कर दिया जाए। (आ'ला ह़ज़रत मज़ीद फ़रमाते हैं :) मेरे ख़याल (या'नी मेरी याद दाश्त) में एक **ह़िकायत** है जिस पर मेरा अ़मल है कि एक शख़्स किसी **सय्यिद** से उलझा, उन्हों ने फ़रमाया : मैं **सय्यिद** हूं, कहा : क्या सनद है तुम्हारे सय्यिद होने की ? रात को (सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की) ज़ियारते अक़्दस से मुशर्रफ़ हुवा कि मा'रिकए ह़श्र (या'नी क़ियामत क़ाइम) है, येह शफ़ाअ़त ख़्वाह (या'नी शफ़ाअ़त का त़लब गार) हुवा, ए'राज़ फ़रमाया (या'नी मुंह फेर लिया)। उस ने अ़र्ज़ की : मैं भी हुज़ूर का उम्मती हूं। फ़रमाया : क्या सनद है तेरे उम्मती होने की ?

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 29, स. 587)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, "**दा'वते इस्लामी**" के प्यारे प्यारे माह़ोल में सह़ाबए किराम व अहले बैते अत़्हार की मह़ब्बत घोल घोल कर पिलाई जाती है, दा'वते इस्लामी के मुख़्तलिफ़ इज्तिमाआ़त में जहां फ़ज़ाइले सह़ाबए किराम बयान किये जाते

हैं, वहीं अहले बैते अत़्हार की मुबारक सीरत बयान कर के उन से भी रोशनी ली जाती है, ''शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या'' में मौजूद अहले बैते अत़्हार की मह़ब्बत की ख़ैरात मांगने पर मुश्तमिल एक शे'र सुनिये और अगर अब तक नहीं हुए तो ग़ुलामाने सह़ाबा व अहले बैत की दीनी तह़रीक, ''दा'वते इस्लामी'' के प्यारे प्यारे दीनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये !

दो जहां में ख़ादिमे आले रसूलुल्लाह कर

ह़ज़रते आले रसूले मुक़्तदा के वासित़े

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 151)

इस शे'र में सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या के 37वें शैख़े त़रीक़त या'नी ह़ज़रते सय्यिद आले रसूल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वसीले से अहले बैत का ख़ादिम बनने की सआ़दत मिलने की दुआ़ मांगी गई है।

(शर्ह़े शजरा शरीफ़, स. 116)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सय्यिदों का अदब करें

ह़ज़रते अ़ली ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बा'ज़ अहले इ़ल्म ने यहां तक फ़रमाया है कि सादाते किराम अगर्चे नसब (या'नी नस्ल) में **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कितने ही दूर हों, उन का हम पर ह़क़ है कि अपनी ख़्वाहिशों पर उन की रिज़ा को मुक़द्दम करें (या'नी उन की ख़ुशी को

अपनी ख़ुशी पर तरजीह़ दें) और उन की भरपूर ता'ज़ीम करें और जब येह ह़ज़रात (या'नी सय्यिद साह़िबान) ज़मीन पर तशरीफ़ फ़रमा हों तो ऊंची निशस्त (या'नी कुरसी या सोफ़े वग़ैरा) पर न बैठें। **(نورالابصار ص۱۲۹)**

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐ़ने नूर तेरा सब घराना नूर का

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 246)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

40 ह़दीसें पहुंचाने की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जो शख़्स मेरी उम्मत तक पहुंचाने के लिये दीन के मुतअ़ल्लिक़ "**40 ह़दीसें**" याद कर लेगा तो उसे **अल्लाह** पाक क़ियामत के दिन आ़लिमे दीन की ह़ैसिय्यत से उठाएगा और बरोज़े क़ियामत मैं उस का शफ़ीअ़ (या'नी शफ़ाअ़त करने वाला) व गवाह होउंगा।" **(شُعَبُ الْاِیمان ج۲ص۲۷۰حدیث۱۷۲۶)** ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह़लवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस से मुराद चालीस अह़ादीस का लोगों तक पहुंचाना है अगर्चे वोह याद न हों। **اَلْحَمْدُ لِلّٰه (اشعۃُ اللّمعات ج۱ص۱۸۶)**! ह़दीसे पाक में बयान की गई फ़ज़ीलत उस को भी ह़ासिल होगी जो छाप (या'नी प्रिन्ट करवा) कर या देख कर बयान कर के या किसी भी ज़रीए़ से लोगों तक 40 ह़दीसें पहुंचाए लिहाज़ा येह फ़ज़ीलत पाने की निय्यत से **फ़ज़ाइले अहले बैत** के मुतअ़ल्लिक़ "40 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" तह़रीरन पेश किये जाते हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

फ़ज़ाइले अहले बैत के बारे में 40 ह़दीसें

﴿1﴾ अपनी औलाद को तीन बातें सिखाओ : अपने नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत, अहले बैत की मह़ब्बत और तिलावते क़ुरआन।

(الجامع الصغير ص٢٥ حديث ٣١١)

अहले बैत किश्तिये नूह़ की त़रह़

﴿2﴾ مَثَلُ اَهْلِ بَيْتِیْ مَثَلُ سَفِيْنَةِ نُوْحٍ مَّنْ رَّكِبَهَا نَجَا، وَمَنْ تَخَلَّفَ عَنْهَا غَرِقَ۔ या'नी मेरे अहले बैत की मिसाल किश्तिये नूह़ की त़रह़ है, जो इस में सुवार हुवा नजात पा गया और जो इस से पीछे रहा हलाक (या'नी बरबाद) हो गया।

(المستدرك ج٣ ص٨١ حديث ٣٣٦٥)

अहले बैत किश्ती और सह़ाबा सितारे

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : समुन्दर का मुसाफ़िर किश्ती का भी ह़ाजत (या'नी ज़रूरत) मन्द होता है और तारों की रहबरी का भी, कि जहाज़ सितारों की रहनुमाई पर ही समुन्दर में चलते हैं, इसी त़रह़ उम्मते मुस्लिमा अपनी ईमानी ज़िन्दगी में अहले बैते अत़्हार (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) के भी मोह़ताज (या'नी ज़रूरत मन्द) हैं और सह़ाबए किबार (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) के भी ह़ाजत मन्द। उम्मत के लिये सह़ाबा की इक़्तिदा (या'नी पैरवी) में ही इहतिदा या'नी हिदायत है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 345) मुफ़्ती साह़िब एक और मक़ाम पर फ़रमाते हैं : दुन्या समुन्दर है इस में सफ़र के लिये जहाज़ की सुवारी और तारों की रहबरी दोनों की ज़रूरत है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! अहले सुन्नत का बेड़ा पार है कि येह अहले बैत और सह़ाबा दोनों के क़दम से वाबस्ता हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 494)

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्ह़ाबे हुज़ूर
नज्म हैं और नाउ है इतरत रसूलुल्लाह की

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 153)

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : बेड़ा : बह़री जहाज़, किश्ती। **नज्म :** सितारे। **नाउ :** किश्ती। **इतरत :** अहले बैते अत़्हार।

शर्ह़े कलामे रज़ा : اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! अहले सुन्नत का दुन्या व आख़िरत में बेड़ा पार होगा क्यूं कि येह सह़ाबा व अहले बैत दोनों ही से मह़ब्बत करने और इन के मानने वाले हैं। सुन्नी अहले बैते अत़्हार की किश्ती में सुवार हैं और सुन्नियों के रहनुमा सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان "सितारे" हैं तो اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم सुन्नियों का बेड़ा पार होगा और येह **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे पीछे जन्नतुल फ़िरदौस में जाएंगे।

(صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)

बागे़ जन्नत में मुह़म्मद मुस्कुराते जाएंगे
फूल रह़मत के झड़ेंगे हम उठाते जाएंगे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

आले फ़ात़िमा दोज़ख़ से मह़फ़ूज़

﴿3﴾ ऐ फ़ात़िमा ! बेशक **अल्लाह** पाक तुम्हें और तुम्हारी औलाद को अ़ज़ाब नहीं देगा। (معجم کبیر ج۱۱ ص۲۱۰ حدیث ۱۱۶۸۵)

﴾4﴿ जो शख़्स वसीला ह़ासिल करना चाहता है और येह चाहता है कि मेरी बारगाह में उस की कोई ख़िदमत हो, जिस के सबब मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूं, उसे चाहिये कि मेरे अहले बैत की ख़िदमत करे और उन्हें ख़ुश करे। **(الشرف المؤبد للنبهانی ص٥٤)**

﴾5﴿ बेशक मेरे लिये और मेरे अहले बैत के लिये सदक़े का माल ह़लाल नहीं है। **(مسند امام احمد بن حنبل ج٦ ص٢٠٦ حديث ١٧٦٧٩)**

﴾6﴿ मैं ने अपने रब से मांगा कि मेरे अहले बैत से किसी को दोज़ख़ में न ले जाए। उस ने मेरी येह मुराद अ़त़ा फ़रमाई। **(كنز العمال ج١٢ ص٤٤ حديث٣٤١٤٤)**

﴾7﴿ मेरी शफ़ाअ़त मेरी उम्मत के उस शख़्स के लिये है जो मेरे घराने (या'नी अहले बैत) से मह़ब्बत रखने वाला हो। **(تاريخ بغداد ج٢ ص١٤٤)**

क़ुरआने करीम व अहले बैत

﴾8﴿ मैं तुम में दो अ़ज़ीम (या'नी बड़ी) चीज़ें छोड़ रहा हूं, उन में से **पहली** तो **अल्लाह** पाक की किताब (या'नी क़ुरआने करीम) है जिस में हिदायत और नूर है, तुम **अल्लाह** पाक की किताब (या'नी क़ुरआने करीम) पर अ़मल करो और इसे मज़बूती से थाम लो। **दूसरे** मेरे अहले बैत हैं, और तीन मरतबा इर्शाद फ़रमाया : मैं तुम्हें अपने अहले बैत के मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** पाक की याद दिलाता हूं। **(مسلم ص١٠٠٨ حديث٦٢٢٥)**

इमाम शरफ़ुद्दीन हुसैन बिन मुह़म्मद त़ीबी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मा'ना येह है कि मैं तुम्हें अपने अहले बैत की शान के ह़वाले से **अल्लाह** पाक से डराता हूं और तुम से कहता हूं कि तुम **अल्लाह** पाक से डरो, इन्हें तक्लीफ़ न दो बल्कि इन की ह़िफ़ाज़त करो। **(شرح الطيبی ج١١ ص٢٩٦ تحت الحديث٦١٤٠)**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या में **अल्लाह** पाक के मक़्बूल बन्दों या'नी सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या के 34वें और 35वें शैख़े त़रीक़त या'नी ह़ज़रते शाह अबुल बरकात आले मुह़म्मद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه और ह़ज़रते शाह ह़म्ज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वसीले से कितने प्यारे अन्दाज़ से बारगाहे इलाही में **अहले बैते किराम** की मह़बबत का सुवाल किया गया है :

ह़ुब्बे अहले बैत दे, आले मुह़म्मद के लिये
कर शहीदे इ़श्क़, ह़म्ज़ा पेश्वा के वासित़े

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 150)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

अहले बैत से मह़ब्बत करो

﴿9﴾ **अल्लाह** पाक से मह़ब्बत करो क्यूं कि वोह तुम्हें अपनी ने'मत से रोज़ी देता है, और **अल्लाह** पाक की मह़ब्बत (ह़ासिल करने) के लिये मुझ से मह़ब्बत करो, और मेरी मह़ब्बत (पाने) के लिये मेरे **अहले बैत** से मह़ब्बत करो। **(ترمذی ج٥ ص٤٣٤ حدیث٣٨١٤)**

मोमिने कामिल कौन ?

﴿10﴾ لَا يُؤْمِنُ عَبْدٌ حَتّٰى اَكُوْنَ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ نَفْسِهٖ، وَتَكُوْنَ عِتْرَتِيْ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ عِتْرَتِهٖ۔

या'नी उस वक़्त तक कोई (कामिल) मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उस को उस की जान से ज़ियादा प्यारा न हो जाऊं और मेरी औलाद उस को अपनी औलाद से ज़ियादा प्यारी न हो जाए। **(شعب الایمان ج٢ ص١٨٩ حدیث١٥٠٥)**

सह़ाबा का गदा हूं और अहले बैत का ख़ादिम
येह सब है आप ही की तो इनायत या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 330)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** पाक के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

मुह़िब्बे अहले बैत शफ़ाअ़त पाएगा

﴾11﴿ हमारे **अहले बैत** की मह़ब्बत को लाज़िम पकड़ लो क्यूं कि जो **अल्लाह** पाक से इस ह़ाल में मिला कि वोह हम से मह़ब्बत करता है, तो **अल्लाह** पाक उसे मेरी शफ़ाअ़त के सबब जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और उस की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है! किसी बन्दे को उस का अ़मल उसी सूरत में फ़ाएदा देगा जब कि वोह हमारा (या'नी मेरा और मेरे अहले बैत का) ह़क़ पहचाने। (معجم اوسط ج۱ص۶۰۶حدیث۲۲۳۰)

﴾12﴿ तुम में बेहतर आदमी वोह है जो मेरे बा'द मेरे अहले बैत के लिये बेहतर होगा। (المستدرك ج ٤ ص٣٦٩ حديث ٥٤١٠)

﴾13﴿ उन लोगों का क्या ह़ाल है जो येह गुमान करते हैं कि मेरी क़राबत (या'नी रिश्तेदारी) फ़ाएदा न देगी। हर तअ़ल्लुक़ व रिश्ता क़ियामत में मुन्क़त़अ़ (या'नी ख़त्म) हो जाएगा मगर मेरा रिश्ता व तअ़ल्लुक़ (ख़त्म न होगा) क्यूं कि (येह) दुन्या व आख़िरत में जुड़ा हुवा है।

(مجمع الزوائد ج۸ص۳۹۸ حدیث۱۳۸۲۷)

आख़िरी ह़ज में फ़रमाया

﴾14﴿ (आख़िरी) ह़ज में अ़रफ़े के दिन अपनी (मुबारक) ऊंटनी क़स्वा पर ख़ुत़्बा देते हुए फ़रमाया : "ऐ लोगो! मैं ने तुम में वोह चीज़ छोड़ी है कि जब तक तुम इन को थामे रहोगे गुमराह न होगे, **अल्लाह** पाक की किताब (या'नी क़ुरआने करीम) और मेरी इ़तरत या'नी अहले बैत।"

(ترمذی ج۵ص۴۳۳حدیث۳۸۱۱)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

मददगार आक़ा

﴾15﴿ जो मेरे **अहले बैत** में से किसी के साथ अच्छा सुलूक करेगा मैं क़ियामत के दिन इस का बदला उसे अ़त़ा फ़रमाऊंगा। (تاریخ ابنِ عساکر ج٤٥ص٣٠٣) ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (वफ़ात : 1031 हि./1622 ई.) इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : येह ह़दीसे पाक इस बात पर दलालत करती है कि **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (**अल्लाह** पाक की अ़त़ा से) इ़नायत फ़रमाने (या'नी देने) वाले हैं और येह बात किसी से ढकी छुपी नहीं, लिहाज़ा उस शख़्स को मुबारक हो जिस की परेशानी वोह दूर फ़रमा दें या उस की पुकार पर तशरीफ़ ले आएं और उस की ह़ाजत व ज़रूरत पूरी फ़रमा दें। (فیض القدیر ج٦ص٢٢٣)

वल्लाह वोह सुन लेंगे, फ़रियाद को पहुंचेंगे
इतना भी तो हो कोई, जो आह ! करे दिल से

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 143)

आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बदला देंगे

﴾16﴿ जो शख़्स औलादे अ़ब्दुल मुत्त़लिब में किसी के साथ दुन्या में भलाई करे, उस का बदला देना मुझ पर लाज़िम है जब वोह रोज़े क़ियामत मुझ से मिलेगा। (تاریخِ بغداد ج١٠ص١٠٢)

सय्यिदों की ख़िदमत की तरग़ीब

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه "फ़तावा रज़विय्या" में येह ह़दीसे पाक लिखने के बा'द

फ़रमाते हैं : **अल्लाहु अक्बर ! अल्लाहु अक्बर !** क़ियामत का दिन, वोह क़ियामत का दिन, वोह सख़्त ज़रूरत, सख़्त ह़ाजत का दिन, और हम जैसे मोह़ताज, और सिला (या'नी बदला) अ़त़ा फ़रमाने को मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सा साह़िबुत्ताज, ख़ुदा जाने क्या कुछ दें और कैसा कुछ निहाल (या'नी मालामाल) फ़रमा दें, एक निगाहे लुत्फ़ उन की जुम्ला मुहिम्माते दो जहां को (या'नी दोनों जहां की तमाम मुश्किलात के ह़ल के लिये) बस है, बल्कि ख़ुद येही सिला (या'नी बदला) करोड़ों सिले (या'नी बदलों) से आ'ला व अन्फ़स (या'नी नफ़ीस तरीन व बेहतरीन) है, जिस की त़रफ़ कलिमए करीमा (या'नी येह मुबारक अल्फ़ाज़), اِذَا لَقِيْتَنِیْ (या'नी जब वोह रोज़े क़ियामत मुझ से मिलेगा) इशारा फ़रमाता है, ब लफ़्ज़े ''اِذَا'' ता'बीर फ़रमाना (या'नी ''जब'' का लफ़्ज़ कहना) بِحَمْدِاللّٰه रोज़े क़ियामत वा'दए विसाल व दीदारे मह़बूबे ज़िल जलाल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुज़्दा सुनाता है (या'नी सय्यिदों के साथ भलाई करने वालों को क़ियामत के रोज़ ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत व मुलाक़ात की ख़ुश ख़बरी है) मुसल्मानो ! और क्या दरकार है ? दौड़ो और इस दौलत व सआ़दत को लो। وَبِاللّٰهِ التَّوْفِيق (या'नी येह **अल्लाह** पाक ही की तौफ़ीक़ से है)।

मज़ीद एक मौक़अ़ पर फ़रमाते हैं, اَقُوْل (या'नी मैं कहता हूं) : बड़े माल वाले अगर अपने ख़ालिस मालों से बत़ौरे हदिय्या (या'नी GIFT) इन ह़ज़राते उ़ल्या (या'नी बुलन्द मर्तबा साह़िबान) की ख़िदमत न करें तो उन (मालदारों) की (अपनी) बे सआ़दती (व मह़रूमी) है, वोह वक़्त याद करें

जब इन ह़ज़रात (सादाते किराम) के जद्दे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सिवा ज़ाहिरी आंखों को भी कोई मल्जा व मावा (या'नी पनाह का ठिकाना) न मिलेगा, क्या पसन्द नहीं आता कि वोह माल जो उन्हीं के सदक़े में, उन्हीं की सरकार से अ़ता हुवा, जिसे अ़न्क़रीब छोड़ कर फिर वैसे ही ख़ाली हाथ ज़ेरे ज़मीन (या'नी क़ब्र में) जाने वाले हैं, उन (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ख़ुशनूदी के लिये उन के पाक मुबारक बेटों (या'नी सय्यिदों) पर उस का एक ह़िस्सा सर्फ़ किया करें कि उस सख़्त ह़ाजत के दिन (या'नी बरोज़े क़ियामत) उस जव्वादे करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के भारी इन्आ़मों, अ़ज़ीम इक्रामों से मुशर्रफ़ हों। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 10, स. 105)

अहले बैत पर ज़ुल्म करने वालों पर जन्नत ह़राम

﴾17﴿ जिस शख़्स ने मेरे अहले बैत पर ज़ुल्म किया और मुझे मेरी इ़तरत (या'नी औलाद) के बारे में तक्लीफ़ दी, उस पर जन्नत ह़राम कर दी गई।

(الشرف المؤبد ص۹۹)

दिल में ईमान दाख़िल न होगा

﴾18﴿ उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है! किसी के दिल में ईमान दाख़िल न होगा (या'नी कमाले ईमान नसीब न होगा) ह़त्ता कि **अल्लाह** व रसूल के लिये, "तुम लोगों से मह़ब्बत करे।"

(ترمذی ج۵ ص۴۲۲ حدیث۳۷۸۳)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से "**तुम लोगों से मह़ब्बत करे**" की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : इस से मुराद

हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के सारे **अहले बैत,** औलाद, अज़्वाज (या'नी पाक बीवियां) और हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के सारे क़राबत दार (या'नी रिश्तेदार) हैं, जिन में ह़ज़रते अ़ब्बास (رَضِیَ اللهُ عَنْه) (भी) दाख़िल हैं। इन सब से मह़ब्बत इस लिये करे कि इन में **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए येह ह़ज़रात हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का कुम्बा (या'नी ख़ानदान) हैं जब हुज़ूर प्यारे तो हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का सारा कुम्बा (या'नी ख़ानदान) भी प्यारा। (मिरआत, जि. 8, स. 470)

किस ज़बां से हो बयाने इ़ज़्ज़ो शाने अहले बैत

मद्ह़ गोए मुस्त़फ़ा है मद्ह़ ख़्वाने अहले बैत

(ज़ौक़े ना'त, स. 100)

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : इ़ज़्ज़ : अ़ज़मत। **मद्ह़ गो, मद्ह़ ख़्वान :** ता'रीफ़ करने वाला।

शर्ह़े कलामे ह़सन : अहले बैत या'नी गुलशने मुस्त़फ़ा के महक्ते फूलों की अ़ज़मतो शान कौन बयान कर सकता है ! ह़क़ येह है कि अहले बैते किराम की ता'रीफ़ करने वाला दर ह़क़ीक़त **अल्लाह** पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'रीफ़ कर रहा होता है।

''पन्जतन पाक'' से मुराद कौन ?

﴾19﴿ तमाम मुसल्मानों की अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं : नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक सुब्ह़ को बाहर तशरीफ़ ले गए आप पर काली ऊन की मख़्लूत़ (या'नी मुनक़्क़श) चादर

थी, ह़सन इब्ने अ़ली आए, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने इन्हें (चादर में) दाख़िल कर लिया फिर हुसैन इब्ने अ़ली आए वोह भी इन के साथ दाख़िल हो गए फिर (ह़ज़रते) फ़ातिमा (رَضِیَ اللهُ عَنْهَا) आईं इन्हें भी (चादर में) दाख़िल कर लिया गया फिर जनाबे अ़ली (رَضِیَ اللهُ عَنْه) आए इन्हें भी दाख़िल कर लिया फिर येह आयत पढ़ी :

اِنَّمَا یُرِیْدُ اللّٰهُ لِیُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَیْتِ وَ یُطَهِّرَكُمْ تَطْهِیْرًا ﴿۳۳﴾ (پ۲۲، الاحزاب:۳۳)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह तो येही चाहता है कि ऐ नबी के घर वालो कि तुम से हर नापाकी दूर फ़रमा दे और तुम्हें पाक कर के ख़ूब सुथरा कर दे।

(مسلم ص۱۰۱۳ حدیث٦٢٦١)

"**मिरआत**" जिल्द 8 सफ़ह़ा 452 पर है : बा'ज़ रिवायात में है कि (उम्मुल मुअमिनीन) ह़ज़रते उम्मे सलमा (رَضِیَ اللهُ عَنْهَا) ने हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से इस मौक़ए़ पर अ़र्ज़ किया : हुज़ूर ! मैं भी आप की **अहले बैत** हूं ? फ़रमाया : तुम भी अहले बैत हो, बा'ज़ रिवायात में है कि हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने (ह़ज़रते) उम्मे सलमा (رَضِیَ اللهُ عَنْهَا) को भी कम्बल में ले लिया फिर येह दुआ़ फ़रमाई। ख़याल रहे ! कि लफ़्ज़ **पन्जतन पाक** (या'नी पांच पाक बदन) इस ह़दीस से लिया गया है और येह वाक़िआ़ बहुत बार हुवा कभी उम्मे सलमा (رَضِیَ اللهُ عَنْهَا) को कम्बल शरीफ़ में दाख़िल नहीं किया और कभी दाख़िल फ़रमा लिया है।

(मिरआत, जि. 8, स. 452)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

फ़ज़्ल कर रहूम कर तू अ़ता कर और मुआ़फ़ ऐ ख़ुदा हर ख़ता कर
वासिता पन्जतन पाक का है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

(वसाइले बख़्शिश, स. 135)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

﴿20﴾ जो शख़्स अहले बैत से दुश्मनी रखते हुए मरा, वोह क़ियामत के दिन इस ह़ाल में आएगा कि उस की पेशानी पर लिखा होगा : ''येह आज **अल्लाह** पाक की रह़मत से मायूस है।'' (تفسیر قرطبی ج١٦ص١٧)

क़ुरआने करीम व अहले बैत

﴿21﴾ मैं तुम में दो चीज़ें छोड़ता हूं कि अगर तुम इन्हें थामे रहोगे तो मेरे बा'द गुमराह न होगे उन में से एक (चीज़) दूसरी से बड़ी है, **अल्लाह** पाक की किताब (या'नी क़ुरआने करीम) जो आस्मान से ज़मीन तक दराज़ (या'नी लम्बी) रस्सी है और मेरी **इतरत** या'नी मेरे **अहले बैत,** येह दोनों (या'नी क़ुरआने करीम व अहले बैत) जुदा न होंगे ह़त्ता कि मेरे पास ह़ौज़ पर आ जाएं। तो ग़ौर करो ! तुम इन दोनों से मेरे बा'द क्या मुआ़मला करते हो। (ترمذی ج٥ص٤٣٤ حدیث٣٨١٣)

शर्ह़े ह़दीस : इस (ह़दीसे पाक) के दो मत़लब हो सकते हैं : एक (मत़लब) येह कि **क़ुरआन** और **अहले बैत** आपस में एक दूसरे से जुदा न होंगे, **अहले बैत** हमेशा क़ुरआनो ह़दीस पर आ़मिल (या'नी अ़मल करते) रहेंगे, क़ुरआन उन के दिलो दिमाग़ और अ़मल में रहेगा। दूसरे (मा'ना) येह कि **क़ुरआन** और **अहले बैत** कभी मुझ से जुदा न होंगे ह़त्ता कि येह दोनों मेरे पास ह़ौज़ पर पहुंच जावेंगे और हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की

बारगाहे आ़ली में उन की सिफ़ारिश करेंगे जिन्हों ने इन दोनों का ह़क़ अदा किया। (मिरआत, जि. 8, स. 468)

﴾22﴿ जो शख़्स हम (या'नी मुझ से और अहले बैत) से बुग़्ज़ या ह़सद करेगा, उसे क़ियामत के दिन ह़ौज़े कौसर से आग के चाबुकों (या'नी हेन्टर्ज़) से दूर किया जाएगा। (معجم اوسط ج۲ص۳۳حدیث۲٤۰۵)

﴾23﴿ उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, हमारे अहले बैत से बुग़्ज़ रखने वाले को **अल्लाह** पाक जहन्नम में दाख़िल करेगा।

(المستدرك ج٤ص١٣١ حديث ٤٧٧١)

और जितने हैं शहज़ादे उस शाह के — उन सब अहले मकानत पे लाखों सलाम
उन की बाला शराफ़त पे आ'ला दुरूद — उन की वाला सियादत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 314)

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : शहज़ादे : प्यारे बेटे। **शाह :** बादशाह। **अहले मकानत :** ऊंचे मर्तबे वाले। **बाला :** ऊंची। **शराफ़त :** इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत। **वाला सियादत :** अ़ज़ीम सरदारी।

शर्ह़े कलामे रज़ा : शहन्शाहे अ़रबो अ़जम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जितने भी प्यारे प्यारे बेटे हैं, उन सब बड़े मर्तबे वालों पर लाखों सलाम। उन की अ़ज़ीम शराफ़त पर **अल्लाह** पाक की रह़मतें हों और उन की बड़ी सरदारी पे लाखों सलाम।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

﴾24﴿ जिस ने हमारे **अहले बैत** से बुग़्ज़ रखा वोह मुनाफ़िक़ है।

(فضائل الصحابه لامام احمدبن حنبل ج۲ ص٦٦١حديث١١٢٦)

﴾25﴿ ऐ बनी हाशिम ! बेशक मैं ने **अल्लाह** पाक से तुम्हारे लिये सुवाल किया कि वोह तुम्हें बहादुर, दिलेर और रह़ूम दिल बनाए और मैं ने सुवाल किया कि वोह तुम्हारे भूले हुओं को राह दिखाए और वोह तुम्हें डराने वालों से अम्न अ़त़ा फ़रमाए और वोह तुम्हारे भूकों को पेट भर कर खिलाए। उस की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! उन में से कोई मोमिने (कामिल) नहीं हो सकता यहां तक कि वोह तुम से मेरी मह़ब्बत की वज्ह से मह़ब्बत करे। **(معجم اوسط ج۸ ص۳۷۳ حدیث ۷۷۵۷)**

﴾26﴿ मैं तुम से दो चीज़ों का सुवाल करता हूं क़ुरआने करीम और मेरी आल (की इ़ज़्ज़तो ह़ुर्मत) का। **(حلیۃ الاولیاء ج۹ ص۷۳ حدیث ۱۳۱۵۳)**

﴾27﴿ सब से पहले मेरे ह़ौज़ (या'नी ह़ौज़े कौसर) पर आने वाले मेरे **अहले बैत** होंगे। **(السنۃ لابن ابی عاصم ص۱۷۳ حدیث ۷۶۶)**

﴾28﴿ तुम में से पुल सिरात़ पर सब से ज़ियादा साबित क़दम वोह होगा जो मेरे **सह़ाबा व अहले बैत** से ज़ियादा मह़ब्बत करने वाला होगा।

(جمع الجوامع ج۱ ص۸۶ حدیث ۴۵۴)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : (येह फ़ज़ीलत उस के लिये है) जिस मुसल्मान के दिल में **सह़ाबा व अहले बैत** दोनों की मह़ब्बत जम्अ़ हो गई और वोह इसी ह़ालत में फ़ौत हो गया। मज़ीद फ़रमाते हैं : येह मत़लब भी हो सकता है कि पुल सिरात़ से मुराद दीने इस्लाम हो या'नी तुम में सब से ज़ियादा दीन पर साबित क़दम, कामिलुल ईमान (या'नी मुकम्मल ईमान वाला) वोह होगा जो **सह़ाबा व अहले बैत** से सब से ज़ियादा प्यार करने वाला होगा।

लिहाज़ा इस ह़दीसे पाक से येह नतीजा निकला कि **सह़ाबा व अहले बैत** की मह़ब्बत ईमान के कामिल (या'नी पूरा) होने की दलील है और इस मह़ब्बत से मुराद ऐसी मह़ब्बत है जो किसी शर्ई मुमानअ़त की त़रफ़ ले कर न जाती हो। (मसलन : सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मह़ब्बत में مَعَاذَاللّٰه अहले बैते किराम के बारे में बद गुमानी या अहले बैते पाक की मह़ब्बत में مَعَاذَاللّٰه सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के बारे में बद गुमानी की हरगिज़ हरगिज़ इजाज़त नहीं) **(فیض القدیر ج۱ص۱۹۲ حدیث۱۵۹)**

आलो अस्ह़ाब से मह़ब्बत है और सब औलिया से उल्फ़त है
येह सब अल्लाह की इ़नायत है मिल गई मुस्त़फ़ा की उम्मत है

(वसाइले बख़्शिश, स. 684)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

﴿29﴾ मैं क़ियामत के दिन चार (त़रह़ के) बन्दों की शफ़ाअ़त फ़रमाऊंगा (1) मेरी आल की इ़ज़्ज़तो ता'ज़ीम करने वाला (2) मेरी आल की ज़रूरिय्यात पूरा करने वाला (3) मेरी आल की परेशानी में उन के मसाइल ह़ल करने की कोशिश करने वाला (4) अपने दिलो ज़बान से मेरी आल से मह़ब्बत करने वाला। **(جمع الجوامع ج۱ص۳۸۰حدیث ۲۸۰۹)**

﴿30﴾ **अल्लाह** पाक उस बन्दे पर सख़्त ग़ज़ब फ़रमाएगा जिस ने मेरी आल को तक्लीफ़ पहुंचाई। **(جمع الجوامع ج۱ص۴۱۰حدیث ۳۰۵۹)**

﴿31﴾ पेट भर कर खाने वाले, अपने रब की फ़रमां बरदारी से ग़ाफ़िल रहने वाले, अपने नबी (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की सुन्नत को छोड़ने वाले, अ़ह्द तोड़ने वाले, अपने नबी (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की आल को मबग़ूज़ (या'नी ना

पसन्द) रखने वाले और अपने हमसाए को तक्लीफ़ देने वाले को **अल्लाह** पाक ना पसन्द फ़रमाता है । (جمع الجوامع ج۲ص۴۳۲ حدیث ۶۸۹۸)

﴾32﴿ मेरे अहले बैत व अन्सार (या'नी अन्सारी सहा़बा) मेरी ख़ा़स जमाअ़त और मेरे हमराज़ हैं । (الفردوس ج۱ص۴۰۷ حدیث۱۶۴۵)

﴾33﴿ **अल्लाह** पाक और मैं ने इन छे अफ़राद पर ला'नत फ़रमाई है : (1) **अल्लाह** पाक की किताब में ज़ियादती करने वाला (2) तक़्दीर को झुटलाने वाला (3) ज़ो़र, ज़बर दस्ती से हा़किम बनने वाला (4) उस शै को इ़ज़्ज़त देने वाला जिसे **अल्लाह** पाक ने ज़लील किया हो और उस को ज़लील करने वाला जिस को **अल्लाह** पाक ने इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमाई हो (5) **अल्लाह** पाक की ह़राम की हुई शै को ह़लाल करने वाला (6) मेरी आल के मुआ़मले में उस शै को ह़लाल समझने वाला जिस को **अल्लाह** पाक ने ह़राम किया हो और मेरी सुन्नत को छोड़ने वाला । (تِرمذی ج۴ص۶۱ حدیث ۲۱۶۱)

﴾34﴿ तीन चीज़ें ऐसी हैं जिस ने इन की ह़िफ़ाज़त की, **अल्लाह** पाक उस की उस के दीनो दुन्या के मुआ़मले में ह़िफ़ाज़त फ़रमाएगा और जिस ने इन को ज़ाएअ़ किया **अल्लाह** पाक उस की किसी भी मुआ़मले में ह़िफ़ाज़त नहीं फ़रमाएगा : (1) इस्लाम की इ़ज़्ज़तो एह़तिराम (2) मेरी इ़ज़्ज़तो एह़तिराम (3) मेरे रिश्ते व क़राबत दारों की इ़ज़्ज़तो एह़तिराम ।

(معجم کبیر ج۳ ص۱۲۶ حدیث ۲۸۸۱)

﴾35﴿ लोगों में सब से बेहतर अहले अ़रब हैं और अ़रब में बेहतर क़ुरैश वाले और क़ुरैश में बेहतर बनू हाशिम हैं । (الفردوس ج۲ص۱۷۸ حدیث ۲۸۹۲)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

अहले बैत को तक्लीफ़ देने वाले की उ़म्र में बरकत नहीं होती

﴾36﴿ जिसे पसन्द हो कि उस की उ़म्र में बरकत हो और **अल्लाह** पाक उसे अपनी दी हुई ने'मत से फ़ाएदा दे तो उसे लाज़िम है कि मेरे बा'द मेरे अहले बैत से अच्छा सुलूक करे, जो ऐसा न करे उस की उ़म्र की बरकत उड़ जाए और क़ियामत में मेरे सामने काला मुंह ले कर आए।

(كنز العمال ج١٢ ص٤٦ حديث٣٤١٦٦)

﴾37﴿ सितारे आस्मान वालों के लिये अमान हैं और मेरे अहले बैत मेरी उम्मत के लिये अमान व सलामती हैं। (نوادر الاصول ج٢ ص٨٤٠ حديث ١١٣٣)

﴾38﴿ ह़सन व ह़ुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا) दुन्या में मेरे दो फूल हैं।

(بخاری ج٢ ص٥٤٧ حديث٣٧٥٣)

﴾39﴿ ह़सन व ह़ुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا) जन्नती जवानों के सरदार हैं।

(ترمذی ج٥ ص٤٢٦ حديث٣٧٩٣)

﴾40﴿ जिस ने इन दोनों (ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا) और इन के वालिदैन से मह़ब्बत की, वोह क़ियामत के दिन मेरे साथ मेरे दरजे में होगा।

(معجم كبير ج٣ ص ٥٠ حديث٢٦٥٤)

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! याद रहे ! **सालिह़ीन** (या'नी नेक लोगों) के साथ होने से येह लाज़िम नहीं आता कि उस का दरजा और जज़ा हर ए'तिबार से सालिह़ीन (या'नी आ'ला दरजे के नेक लोगों) की मिस्ल होगी, (شرح مسلم للنووی ج١٦ ص١٨٦) बल्कि किसी दरजे में किसी ख़ास ए'तिबार से शिर्कत होगी अगर्चे मक़ामो इ़ज़्ज़त व मे'यार के ए'तिबार से

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

लाखों दरजे फ़र्क़ हो, जैसे महल में बादशाह व ग़ुलाम (या कोठी में सेठ और मुलाज़िम) दोनों होते हैं लेकिन फ़र्क़ वाज़ेह़ है।

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : आले पाक और इन के ह़ुक़ूक़ की ताकीद के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीसें ह़द्दे तवातुर को पहुंची हुई हैं। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 24, स. 433)

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो
कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही !

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब
जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा
के पड़ोस का त़ालिब

18 जुल क़ा'दा 1442 सि.हि.
29-06-2021

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक्तबतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने महल्ले के घरों में ह़स्बे तौफ़ीक़ रिसाले या मदनी फूलों के पेम्फ़लेट हर माह पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	1	इल्तिजाए अ़त्तार	16
सादाते किराम से ह़ुस्ने सुलूक करने का अ़ज़ीमुश्शान इन्आ़म (ह़िकायत)	1	सय्यिद होने का सुबूत मांगना कैसा ?	17
		सय्यिदों का अदब करें	19
सच्चा आ़शिक़े रसूल कौन ?	4	40 ह़दीसें पहुंचाने की फ़ज़ीलत	20
क़ुरआने करीम से फ़ज़ाइले अहले बैत का सुबूत	4	फ़ज़ाइले अहले बैत के बारे में 40 ह़दीसें	21
		अहले बैत किश्तिये नूह़ की त़रह़	21
अहले बैत से मुराद कौन ?	5	अहले बैत किश्ती और सह़ाबा सितारे	21
शाने अहले बैत	5	आले फ़ात़िमा दोज़ख़ से मह़फ़ूज़	22
पाक बीवियां अहले बैत में दाख़िल हैं	7	क़ुरआने करीम व अहले बैत	23
बीबी आ़इशा की ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत	7	अहले बैत से मह़ब्बत करो	24
आ़शिक़े अक्बर की अहले बैते अत़्हार से मह़ब्बत	9	मोमिने कामिल कौन ?	24
		मुह़िब्बे अहले बैत शफ़ाअ़त पाएगा	25
सिद्दीक़े अक्बर ता'ज़ीमन खड़े हो जाते	9	आख़िरी ह़ज में फ़रमाया	25
ह़सनैने करीमैन की ख़ुशी में फ़ारूक़े आ'ज़म की ख़ुशी ! (ह़िकायत)	10	मददगार आक़ा	26
		आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बदला देंगे	26
सुवारी से नीचे तशरीफ़ ले आते	11	सय्यिदों की ख़िदमत की तरग़ीब	26
कन्धों पर उठा लें (ह़िकायत)	12	अहले बैत पर ज़ुल्म करने वालों पर जन्नत ह़राम	28
सुसराली रिश्तेदारों की शान	13		
सह़ाबा व अहले बैत से मह़ब्बत का बदला (ह़िकायत)	14	दिल में ईमान दाख़िल न होगा	28
		''पन्जतन पाक'' से मुराद कौन ?	29
आ'ला ह़ज़रत सय्यिदों को डबल देते	15	क़ुरआने करीम व अहले बैत	31
सादाते किराम को ख़ुसूसन क़ुरबानी का गोश्त देना	15	अहले बैत को तक्लीफ़ देने वाले की उ़म्र में बरकत नहीं होती	36

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अहले बैत को तक्लीफ़ देने वाले की उ़म्र में बरकत नहीं होती

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिसे पसन्द हो कि उस की उ़म्र में बरकत हो और अल्लाह पाक उसे अपनी दी हुई ने'मत से फ़ाएदा दे तो उसे लाज़िम है कि मेरे बा'द मेरे अहले बैत से अच्छा सुलूक करे, जो ऐसा न करे उस की उ़म्र की बरकत उड़ जाए और क़ियामत में मेरे सामने काला मुंह ले कर आए।

(کنز العمال ج12 ص46 حدیث 34166)

M.R.P.
₹

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320538372
Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 T&C Apply
feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamiindia.org